IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संगत वाद्य के रूप में तबले का महत्व

भावना सक्सेना
शोधार्थी (संगीत)
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय
बरेली(उ० प्र०)

प्रो० डॉ० सोनिया बिंद्रा
शोध निर्देशिका(संगीत)
विभागध्यक्ष संगीत विभाग
एन०के० वी० एम० जी० पी०जी० कॉलेज
चंदौसी (उ० प्र०)

शोध सार

संगीत में संगत शब्द से तात्पर्य है गायक,वादक,नृत्यक,लय,ताल,एवं संगीत की प्रकृति के अनुसार वादन करना। प्राचीन काल में सर्वप्रथम हस्त-स्वर से उसके बाद घन-वाद्य से और फिर अवनद्य-वाद्य से लय ताल देने की परंपरा विकसित हुई। विशेषकर शास्त्रीय संगीत की दृष्टि से अति प्राचीन काल में दुंदुभि,प्राचीन काल में त्रिपुष्कर, मध्यकाल में मृदंग अर्थात पखावज और वर्तमान काल में तबले को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक भारतीय शास्त्रीय संगीत में लय चक्र और ताल चक्र को बनाये रखने के लिए तबला एक प्रमुख संगत ताल -वाद्य है। संगीत की मुख्य तीनो विधाओं (गायन,वादन,नृत्य) में संगत वाद्य के रूप में तबले का विशेष स्थान एवं महत्व है, जो अन्य किसी वाद्य को प्राप्त नहीं है। संगीत में तबला वादन की दो धाराए प्रचार में है एक स्वतंत्र वादन और दूसरी संगत ,पिछले कुछ वर्षो में स्वतंत्र वादन में भी तबला अत्यधिक लोकप्रिय हो गया है,लेकिन मुख्यतः संगीत में इसका प्रयोग संगत वाद्य के रूप में होता रहा है और आगे भी होता रहेगा। इस शोध पत्र के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य संगत वाद्य के रूप में तबले के महत्व को प्रकाश में लाना है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तबले को एक प्रमुख संगत वाद्य माना जाता है उत्तर भारतीय संगीत को नयी क्षेतीज उचाईयो को पार करने तथा देश -विदेश में लोकप्रिय एवं आनंदमयी प्रस्तुति को सफल बनाने में तबला संगत को महत्वपूर्ण स्थान है। गायक,वादक या नृत्यक को प्रस्तुति को सफल बनाने में तबला संगत की मुख्य भूमिका है।

मुख्य शब्दः- तबला, संगत,संगीत, वाद्य ।

परिचय

तबला भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाला एक ताल वाद्य है। भारतीय अवनद्य वाद्य, तबला हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में काफी महत्वपूर्ण है, और अठारहवीं सदी के बाद से इसका प्रयोग शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन -वादन में लगभग अनिवार्य रूप से होता रहा है। तबला गायन,वाद्य, संगीत और नृत्य में संगत के रूप में सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाला अवनद्य वाद्य है। तबला भारतीय संगीत परंपरा में प्रयोग होने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण ताल- वाद्य है जिसका उपयोग मुख्य रूप से संगत करने के लिए किया जाता है। तबला संगत का मुख्य उद्देश्य कलाकार की प्रस्तुति को

निखारना और उसमें रस निष्पत्ति कर प्रस्तुति में स्थिरता प्रदान कर श्रोताओं को आनंदित करना होता है। तबला संगत के लिए अधिक उपयोगी वाद्य समझा जाता है, क्योंकि तबले के बोलो के सरल निकास- मिठास और विभिन्न लयकारियो के सुंदर- वादन के कारण संगत के लिए तबले ने संगीत में शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया है। गायन, वादन एवं नृत्य संगीत की तीनों विधाओं के साथ तबला की संगत बखूबी की जाती है। इन तीनों कलाओं के प्रदर्शन को स्थापित प्रदान करना रस- भाव निष्पत्ति में सहयोग देना और श्रोताओं के मन को आनंदित करना तबला संगत का मुख्य कर्तव्य है। संगत वाद्य में रूप में तबला एक प्रमुख और पसंदीदा वाद्य यंत्र रहा है। किसी भी संगीत प्रस्तुति को पूर्णता सफल बनाने में तबला संगत कलाकारों का बहुत बड़ा हाथ होता है जब तबला संगत कलाकार किसी संगीत प्रस्तुति में मुख्य कलाकार के साथ एकाकार होकर संगत करता है,तो लोग आनंद विभोर होकर उसी संगीत में तल्लीन हो जाते हैं। तबला संगत करके संगीत को विपुलता आनन्दमयता, तल्लीनता प्रदान करने में अतुलनीय एवं अति महत्वपूर्ण योगदान दिया है। तबले को उत्तर भारतीय संगीत के एक प्रतीक के रूप में मान्य किया जाता है, क्योंकि तबला आज समूचे विश्व में भारतीय शास्त्रीय संगीत का कुशल नेतृत्व करते हुए एक सबसे समृद्ध संगत ताल वाद्य के रूप में उभरकर सामने आता है।

तबला वादक पदम् विभूषण स्वर्गीय पंडित कृष्ण महाराज जी का निम्न दृश्य है। -तबला संगत स्वतंत्र वादन से ज्यादा कठिन व चुनौती पूर्ण कार्य होता है। स्वतंत्र वादन करने के लिए आप पहले से घर से ही सारी तैयारी करके चलते हैं ,जबकि इसके विपरीत तबला संगत इसलिए कठिन हो जाती है क्योंकि यहां तबला संगत कलाकार को दूसरों की इच्छाओं का अनुसरण करते हुए अपनी योग्यता, क्षमता ,कला कौशल व सूझ-बूझ का परिचय देना होता है, जो कि एक कठिन एवं चुनौती पूर्ण कार्य।आज तबला विश्व स्तर पर बेहद लोकप्रिय और प्रसिद्ध संगत ताल वाद्य बन चुका है, क्योंकि तबले को ख्याल अर्थशास्त्रीय संगीत, हल्का संगीत, वाद्य संगीत, नृत्य आदि के साथ संगत करने में सबसे सक्षम ताल वाद्य मानते हैं।

संगत वाद्य के रूप में तबले का महत्व

भारतीय शास्त्रीय संगीत नृत्य और सुगम संगीत में तबला एक प्रमुख संगत वाद्य है, यह गायक और वादक के प्रदर्शन को लय ताल और भावनात्मक गहराई प्रदान करता है और कलाकार की प्रस्तुति को निखारता है। भारतीय संगीत में संगत देने के लिए तबला एक अपरिहार्य एवं केंद्रीय भूमिका निभाता रहा है। यह एक संगत ताल वाद्य ही नहीं है, बल्कि मुख्य कलाकार का आधार स्तंभ है, जो प्रस्तुति को एक नई ऊंचाई प्रदान करता है। तबला कई कलाकारों के लिए प्रमुख एवं पसंदीदा ताल वाद्य यंत्र है, क्योंकि गायन, नृत्य और अन्य वाद्य शैलियों के अनुरूप इसकी वादन शैलियाँ विकसित हुई हैं। संगीत के सभी रूपों में तबले को उपयुक्त स्थान दिलाने के लिए इसमें बदलाव भी किए गए हैं, जिससे तबला संगत के क्षेत्र में सबसे उपयुक्त एवं सक्षम वाद्य बन जाए। आज तबला एक विशेष लोकप्रिय एवं प्रिय वाद्य यंत्र बन चुका है। क्योकि इसका प्रमुख कार्य लय चक्र को बनाए रखना और मुख्य कलाकार की प्रस्तुति को प्रभावशाली बनाना है।

इस शोध पत्र के माध्यम से संगत के क्षेत्र में तबले के महत्व को दर्शाया गया है ,और बताया गया है कि तबले के साथ संगत करते समय निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। तभी संगत के द्वारा दर्शकों को आकर्षित एवं मंत्र मुग्ध किया जा सकता है। तबले पर संगत करते समय कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देना अति आवश्यक है जो इस प्रकार हैं।

1- **लय की स्थिरता** :- संगत में लय की स्थिरता अर्थात कलाकार की लय पर पकड़ बहुत आवश्यक है, क्योंकि मुख्य कलाकार चाहे गायन में हो सितार वादन या कत्थक नृत्य में संपूर्ण प्रदर्शन के दौरान तबला वादक लय और ताल को बांधकर रखना है तभी प्रस्तुति मनमोहक और आकर्षक बन पाती है।

2- **सहयोग एवं संतुलन**:- तबला वादक को संगत करते समय हमेशा मुख्य कलाकार के अनुसार उसकी प्रस्तुति से संतुलन बनाकर संगत करनी चाहिए। संगत करते समय सहयोगी भावना एवं संतुलन का होना बहुत आवश्यक है।

3- **स्पष्टता** :- संगत करते समय तबला वादक या संगतकार को ठेके के बोल को साफ और स्पष्ट बजना चाहिए जिससे मुख्य कलाकार की अभिव्यक्ति प्रभावित न हो।

4- **स्थान और दृष्टि:-** संगत करते समय तबला वादक को हमेशा मुख्य कलाकार को 90 डिग्री के कोण पर बैठना चाहिए। जिससे कि तबला वादक की दृष्टि कलाकार की प्रस्तुति पर रहे और लय और ताल का समागम होता रहे और प्रस्तुति सफल हो सके।

तबला संगत सोलो अर्थात स्वतंत्र वादन से भी अधिक कठिन मानी जाती है क्योंकि इसमें मुख्य कलाकार के अनुसार बजाना होता है, जबकि सोलो वादन में वादक स्वतंत्र होता है आधुनिक समय में प्राचीन गीत एवं नृत्य के प्रकारों का प्रचलन कम होने लगा और खयाल, ठुमरी, टप्पा, भजन, गजल और अन्य गीतों के प्रकार विशेषकर प्रचार में आने लगे। इन श्रृंगारिक रचनाओं के मृदगादि गंभीर प्रकृति के वाद्यों का प्रचार कम होने लगा और तबला संगत प्रचार में आया। तबले के साथ संगत करने में मृदंग खुले बोल और बंद बोलो को बजाने में आसानी होती है। इसलिए तबला संगत के लिए अधिक उपयोगी वाद्य बन गया है। तबले के बोलो के सरल निकास, मिठास और विभिन्न लयकारियो के कारण संगत के लिए तबले ने संगीत में शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया है। तबले का मुख्य उद्देश्य मुख्य कलाकार की प्रस्तुति को सफल बनाना, लय को स्थिर रखना और श्रोताओं को आनंदित करना होता है। मुख्य कलाकार की प्रस्तुति को सफल बनाने के लिए तबला संगत का उपयोग किया जाता है। यह एक जटिल कला है जो मुख्य कलाकार के भावों और लय को जीवित करती है।

तबला संगत की विशेषताएं

1- **लयात्मक संतुलन:-** तबला वादक का मुख्य काम मुख्य कलाकार को एक स्थिर और स्पष्ट लय देना होता है।

2- **मर्यादा का ध्यान:-** एक आदर्श कलाकार कभी खुद को श्रेष्ठ दिखाने की कोशिश नहीं करता है, वह हमेशा मुख्य कलाकार को आगे रखकर और खुद उसके सहायक के रूप में रहकर प्रस्तुति को सफल बनाने का पूर्ण प्रयास करता है।

3- **संवाद:-** संगत के दौरान तबला वादक हमेशा मुख्य कलाकार के साथ मूल संवाद स्थापित रखता है जिससे प्रस्तुति में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो।

4- **प्रकारों में विविधता:-** गायन, वादन और नृत्य के साथ तबले की संगत बदल जाती है।

संगीत जगत में तबला संगत का महत्व अतुलनीय है। किसी भी संगीत प्रस्तुति को पूर्णता सफल बनाने में तबला संगत कलाकारों का बहुत बड़ा हाथ होता है। जब तबला संगत कलाकार किसी संगीत प्रस्तुति में मुख्य कलाकार के साथ एकाकार होकर संगत करते हैं, तो लोग आनंद विभोर होकर उसी संगीत में तल्लीन हो जाते हैं। तबला संगत कलाकार नित्य नए-नए प्रयोग करते हुए संगीत को और भी चमत्कारिक व समृद्धशाली स्वरूप देने के प्रयास में संलग्न हैं। यदि विश्व -परिद्रश्य की बात की जाए तो तबला आज समूचे विश्व में भारतीय शास्त्रीय संगीत का कुशल व सफल नेतृत्व करते हुए दृष्ट्व्य हो रहा है आज तबले को उत्तर भारतीय संगीत के एक प्रतीक के रूप में मान्य किया जाता है।

संगीत की तीनों विधाओं के साथ तबला संगत

एक तबला वादक को सफल संगतकार बनने के लिए संगीत की तीनों विधाओं के साथ संगत करने की समझ और ज्ञान होना अति आवश्यक है। संगीत की तीनों शैलियों के साथ तबले की संगत का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है-

- **गायन में संगत:-** गायन की बंदिश और बोल को समझते हुए तबला बजाया जाता है , तबला वादक संगत के दौरान स्पष्ट एवं वजनदार ठेका बजाता है ,ताकि गायक अपनी लय से न भटक। ख्याल ,ध्रुपद,गजल,भजन,या सुगम संगीत में तबला एक निश्चित लय को मजबूती प्रदान करता है।
- **वाद्य संगत:-** सितार, सरोद या बांसुरी बजाते समय वादक के साथ मिलकर तबला एक उत्कृष्ट जुगलबंदी प्रस्तुत करता है। वाद्य यंत्र वादक और तबला वादक आपस में लय और ताल का आदान-प्रदान करते हैं। जब तबला वादक अपनी लय पूरी करता है और तबला वादक उसी लय को बंदिशों को तिहाइयों के माध्यम से दोहरा कर जवाब देता है।
- **नृत्य संगत:-** कत्थक जैसे शास्त्रीय नृत्यों में तबला अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नृतक के द्वारा की गई पढ़त के साथ तबला बिल्कुल सटीक लय में ताल मिलाता है। कत्थक नृत्य में तबला सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो लगभग 300 से 400 सालों से चला आ रहा है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं, कि तबले की एक निजी स्वतंत्रता एवं समृद्ध भाषा है। इस शोध पत्र के माध्यम से तबले के सौंदर्यतत्वों को उजागर किया गया है एवं संगत वाद्य के रूप में तबले के महत्व का विवेचन किया गया है। इस शोध पत्र में संगीत की तीनों विधाओं के साथ तबले की संगति के प्रभाव का भी संक्षिप्त वर्णन किया है। आज संगीत की सफलता तबले की अच्छी संगत पर भी निर्भर है। तबले में अच्छी संगत का उद्देश्य संगीत को अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाना है तबला संगत के द्वारा श्रृंगार रस उत्पन्न होता है और रसरंजकता की अनुभूति होती है। तबला संगत में बोलो का सही निकास लय की सुंदरता, सजावट, माधुर्य बोलो की कोमलता, सुंदर, वंदिशे आदि का सुंदर प्रदर्शन एवं तालमेल के द्वारा ही विभिन्न भाव एवं रसोत्वादन होता है। गायन शैली, वादन शैली, एवं नृत्य शैली की सुंदरता बढ़ाने के लिए जितनी सफलता संगत वाद्य तबले को मिली है अन्य किसी वाद्य को नहीं। तबला आज के युग का सबसे लोकप्रिय संगत वाद्य है, जिसका संगीत के क्षेत्र में बहुत महत्व है क्योंकि तबला संगत संगीत की सभी शैलियों में चार चांद लगा देती है। अर्थात संगत के द्वारा प्रस्तुत और भी मनमोहक हो जाती है और श्रोताजन को कर्णप्रिय लगती है।

निष्कर्ता हम यह कह सकते हैं, कि गायन, वादन, नृत्य, संगत में तबले पर रसोउत्पत्ति होती है तथा तबले पर रसोनिष्पत्ति इसलिए संभव है कि यह एक समुन्नत वाद्य है। अतः कहने का तात्पर्य यह है, कि तबले को यदि भावानुकूल संगति वाद्य कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी । अतः शोध पत्र के अध्ययन के माध्यम से यह प्राप्त हुआ है कि तबला एक विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित संगत वाद्य है, जिसका भविष्य उज्जवल है एवं संगीत में तबले का महत्व हमेशा रहेगा, क्योंकि संगीत की तीन मुख्य विधाये गायन,वादन ,नृत्य तबले की संगत के बिना अधूरी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1- सरल डॉ० भीमसेन-तबला संगत एवं कलाकार।

2- https://www.tablalegacy.com

3- Srivastava Dr.Akanksha-संगीत में तबला संगत का महत्व ।

4- चौधरी डॉ० सीमा-तबला एक समग्र वाद्य(स्वतंत्र वादन एवं संगति) ।

5- सामंत पँ० सुरेश - तबला गाईड।